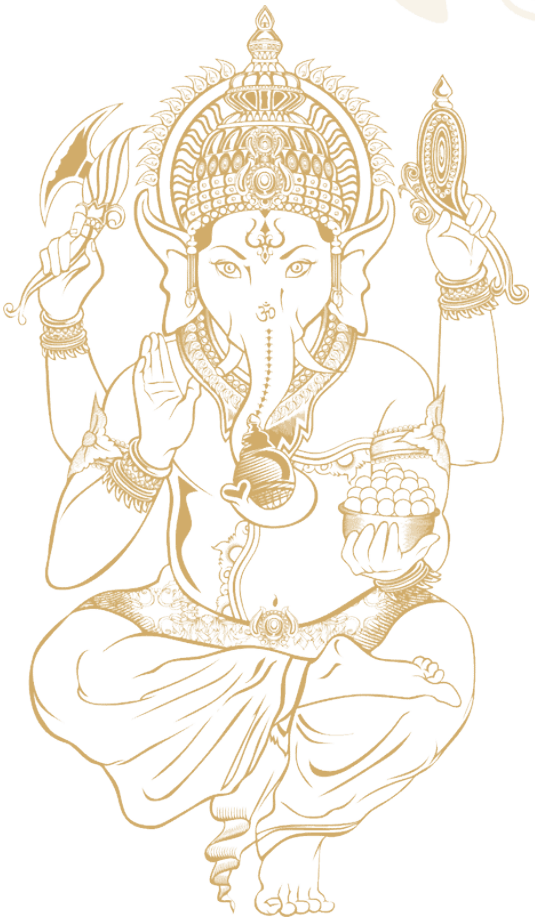

Divisha Upadhyay

22 Jan 2024

07:05 PM

Bharatpur

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121325901

तिथि 22/01/2024 **समय** 19:05:00 **वार** सोमवार **स्थान** Bharatpur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:11:31
अक्षांश 27:13:00 उत्तर **रेखांश** 77:29:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:20:04 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	02:50:34 घं
वेलान्तर	00:11:23 घं
सूर्योदय	07:10:18 घं
सूर्यास्त	17:52:58 घं
चैत्रादि संवत	2080
शक संवत	1945
मास	पौष
पक्ष	शुक्ल
तिथि	12
नक्षत्र	मृगशिरा
योग	ऐन्द्र
करण	बालव

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	सर्प
नाड़ी	मध्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मार्जार
युँजा	पूर्व
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	का-कमला
पाया(रा.-न.)	लौह-स्वर्ण
होरा	सूर्य
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

मंगल 2वर्ष 8मा 28दि

मंगल

22/01/2024
21/10/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	22/01/2024
बुध	18/04/2024
केतु	14/09/2024
शुक्र	14/11/2025
सूर्य	22/03/2026
चन्द्र	21/10/2026

योगिनी

संकटा 3वर्ष 1मा 19दि

संकटा

22/01/2024
13/03/2027

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	22/01/2024
भद्रिका	22/04/2024
उल्का	22/08/2025
सिद्धा	13/03/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			24:07:25	कर्क	आश्लेषा	3	बुध	राहु	---	0:00			
सूर्य			07:49:13	मक	उत्तराषाढ़ा	4	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि	1.44	पुत्र	पितृ	मित्र
चंद्र			01:26:16	मिथु	मृगशिरा	3	मंगल	बुध	मित्र राशि	1.11	कलत्र	मातृ	जन्म
मंगल			19:16:20	धनु	पूर्वाषाढ़ा	2	शुक्र	राहु	मित्र राशि	0.93	आत्मा	भ्रातृ	वध
बुध			16:08:13	धनु	पूर्वाषाढ़ा	1	शुक्र	सूर्य	सम राशि	0.90	अमात्य	ज्ञाति	वध
गुरु			12:14:53	मेष	अश्विनी	4	केतु	बुध	मित्र राशि	1.21	भ्रातृ	धन	साधक
शुक्र			04:49:17	धनु	मूल	2	केतु	मंगल	सम राशि	1.17	ज्ञाति	कलत्र	साधक
शनि			11:11:38	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	शनि	मूलत्रिकोण	1.34	मातृ	आयु	सम्पत
राहु	व		25:03:40	मीन	रेवती	3	बुध	राहु	सम राशि		---	ज्ञान	प्रत्यारि
केतु	व		25:03:40	कन्या	चित्रा	1	मंगल	राहु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	जन्म

लग्न-चलित

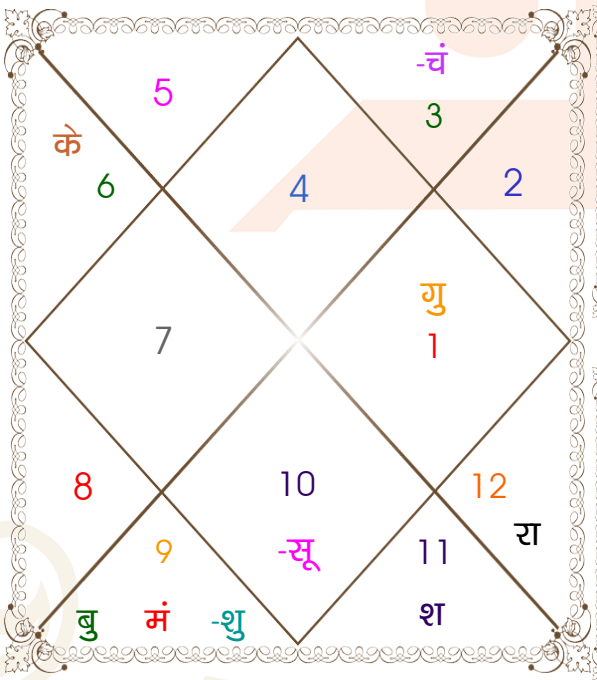

चन्द्र कुंडली

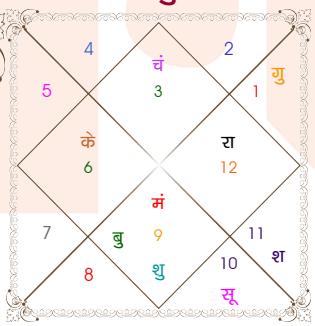

नवमांश कुंडली

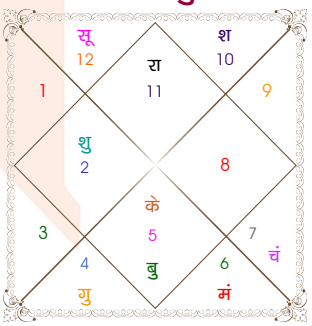

सर्वाष्टकवर्ग

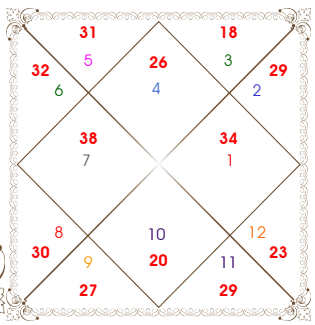

दशमांश कुंडली

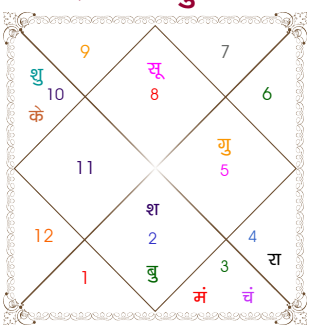

नक्षत्रफल

आप मृगशिरा नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध होगा। आपकी योनि सर्प, वर्ण शूद्र, वर्ग मार्जार, गण देव तथा मध्य नाड़ी होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "क" होगा। यथा कमला, कमलेश, कामिनी।

आप स्वाभाविक रूप से चंचल एवं चतुर होंगी तथा अपने समस्त कार्यों को आप चतुराई से सम्पन्न करेंगी। आप धैर्यशाली होंगी तथा सुख दुःख के समय इसका पूर्ण रूप से परिचय देंगी। कभी कभी व्यस्तता या अन्य कारणों से भूख से भी व्याकुल रहेंगी। कभी कभी अभिमान भी आपमें दृष्टिगोचर होगा जिससे दूसरे लोगों को अपने समक्ष महत्वहीन समझेंगी।

चतुरश्चपलो धीरः कूरकर्मा क्षुधातुरः।
अहंकारी परद्वेषी मृगशीर्णि भवेन्नरः।।
जातकदीपिका

अर्थात् मृगशिरा नक्षत्र में उत्पन्न जातक चतुर चंचल धैर्यवान, कूरकर्म करने वाला, भूख से व्याकुल, अहंकारी तथा अन्य जनों से द्वेष करने वाला होता है।

किसी भी वस्तु की प्रतिलिपि या नकली रूप बनाने में आप अत्यन्त चतुर हो सकती है। साथ ही आप अपने समस्त शुभ कार्यों को स्वयं की बुद्धि तथा योग्यता से सम्पन्न करने में सफल होंगी।

चपलश्चतुरो धीरः कूटकर्मस्वकर्मकृत।
अहंकारी परद्वेषी मृगे भवति मानवः।।
मानसागर

अर्थात् मृगशिरा नक्षत्र का जातक चंचल, चतुर, धैर्यवान, नकली वस्तु बनाने वाला, स्वार्थी, अहंकारी और द्वेषी होता है।

आप स्वभाव से ही भय से आक्रान्त रहेंगी। आप एक कुशल तथा विदुषी महिला भी हो सकती हैं। उत्साह से आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगी तथा सर्वप्रकार के भौतिक सुखों का धनसहित आप उपभोग करेंगी।

चपलश्चतुरोभीरुः पटुरुत्साही धनी मृगे भोगी।
बृहज्जातकम्

अर्थात मृगशिरा नक्षत्रोत्पन्न व्यक्ति चंचल, चतुर, डरपोक, विद्वान, उत्साही धन, वैभव तथा ऐश्वर्य को भोगने वाला होता है।

विनयशीलता आपके स्वभाव का प्रमुख गुण होगा तथा सबसे नम्रतापूर्वक व्यवहार

करेंगी। गुणों तथा गुणवान व्यक्तियों के प्रति आप अपने दिल में अटूट आस्था रखेंगी एवं उन्हे उचित सम्मान प्रदान करेंगी। साथ ही उनसे आपका विशेष अनुराग भी रहेगा। आपकी प्रवृति विलासी होगी तथा सम्पूर्ण प्रकार के विलासमय सुख संसाधनों से परिपूर्ण रहेंगी। उच्चाधिकार प्राप्त या मंत्रीवर्ग की आप प्रिय होंगी तथा इनसे आपको पूर्ण सम्मान तथा सहयोग मिलेगा। साथ ही आप हमेशा जीवन में सत्य के मार्ग पर चलने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी।

शरासनाभ्यासरतो विनीतः सदानुरक्तो गुणिनां गणेषु।
भोक्तानृपस्नेहभरेण पूर्णः सन्मार्गवृतो मृगजात जन्मा।
जातकाभरणम्

अर्थात मृगशिरा नक्षत्र का मानव अस्त्र शस्त्र विद्या में पारंगत, नम्र, गुणों का आदर करने वाला, विलासी राजा का प्रिय और सन्मार्गगामी होता है।

आप शान्त चित्त की महिला होंगी तथा भ्रमण एवं यात्रा करना आपको अच्छा लगेगा। एवं आपका अधिकांश समय यात्रा आदि में ही व्यतीत होगा।

चान्द्रे सौम्यमनोळटनः कुटिलदृक् कामातुरो रोगवान।
जातकपरिजातः

अर्थात मृगशिरा में उत्पन्न जातक सौम्यचित्त वाला घूमने फिरने या यात्रा करने वाला, कुटिल दृष्टि युक्त, कामपीड़ित तथा रोगी होता है।

आप लौहपाद में पैदा हुई हैं। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक जीवन में विभिन्न प्रकार से रोगी, दुःखी, धन एवं सुखसंसाधनों से हीन रहकर जीवन यापन करता है परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभ राशि में स्थित है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की ही प्राप्ति अधिक मात्रा में होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा सामान्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक दानशील प्रवृति की महिला होंगी तथा नित्य प्रति अपनी इस प्रवृति का अनुपालन करती रहेंगी। आप हमेशा सद्गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आप शुभ एवं अच्छे कार्यों में अधिक व्यय करेंगी अनावश्यक या गलत कार्यों पर आप कभी भी व्यय नहीं करेंगी। इसके अतिरिक्त जीवन में विभिन्न प्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों तथा विलासमय वस्तुओं से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

मिथुन राशि में जन्म होने के कारण आपके नेत्र रक्तता लिए हुए श्याम वर्ण के होंगे तथा नासिका उन्नत होगी। अनेक शास्त्रों की आप जानने वाली होंगी। आप सन्देशों के आदान प्रदान का कार्य करेंगी। सिर के बाल आपके घुघंराले होंगे तथा तीव्र बुद्धि की स्वामिनी होंगी। अन्य जनों से आपका लौकिक व्यवहार अत्यन्त ही विनयशील रहेगा। साथ ही अपनी तीक्ष्ण बुद्धि के कारण आप दूसरे लोगों के मन की बातों को जानने में सफलता प्राप्त करेंगी। आपके शरीर के समस्त अंग सुन्दर सुडौल एवं पुष्ट रहेंगे। आपकी वाणी भी सबको प्रिय लगेगी। आपको भोजन अधिक मात्रा में खाना अच्छा लगेगा। संगीत तथा नृत्य में आपकी हार्दिक

अभिरूचि होगी तथा इनके विषय में आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा।

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलताम्रेक्षणः शास्त्राविद्।
दूतः कुत्रिचद् मूर्धजः पटुमति हास्योङ्गित द्यूतवित्।।
चार्वाङ्गाः प्रियवाक् प्रभक्षण रूचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।
क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।
बृहज्जातकम्

काव्य लेखन की प्रतिभा नैसर्गिक रूप से आप में विद्यमान होगी। अतः आप कवियत्री या लेखिका अथवा साहित्य प्रेमी हो सकती हैं। आप अपने जीवन में समस्त सांसारिक तथा भौतिक सुखों का उपभोग करने वाली होंगी। आपकी हथेली में मत्स्य चिन्ह भी हो सकता हैं। विषय वासनाओं के सुख से आप बहुत आकर्षित रहेंगी तथा अपना अधिकांश समय इसी में व्यतीत करेंगी। आप सुन्दर एवं दर्शनीय होंगी तथा शरीर की नसें बाहर से दिखाई देंगी। आप हमेशा सौभाग्यवती रहेंगी तथा हंसने हंसाने के कार्य में भी आपको दक्षता प्राप्त होगी। आपकी आवाज अत्यन्त सुरीली तथा मधुर होगी जो सुनने वाले को अच्छी लगेगी। आपके शरीर की लम्बाई भी अधिक ही रहेगी तथा पुरूष वर्ग को आप हमेशा अपने वश में रखने वाली होंगी।

उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।
हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।।
कान्तः सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुतः स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।
याति क्लीबैश्च रतिकर्म संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।।
सारावली

आप दीर्घ जीवी होंगी तथा आजीवन हंसने हंसाने की प्रिय रहेंगी। हंसना तथा हंसाना दोनों आपको रूचिकर लगेंगे। इधर उधर भ्रमण या यात्रा करना भी आपको रूचिकर लगेगा घर में रहकर भी आप आनन्दानुभूति करेंगी।

दीर्घायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।।
जातकपरिजातः

समाज में आपकी मित्रता का क्षेत्र विस्तृत रहेगा। पुरूष वर्ग की आप अत्यन्त प्रिय रहेंगी तथा अपनी भद्रता एवं योग्यता से समाज में कीर्ति को प्राप्त करेंगी।

प्रियकरः करमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।
मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरवः।।
जातकाभरणम्

आपका शरीर पूर्ण रूप से स्वस्थ, सुन्दर तथा कोमलता से युक्त रहेगा। यद्यपि आप श्लिष्ट शब्दों का अपनी भाषा में प्रयोग करेंगी फिर भी उनके स्पष्ट अर्थ होंगे जिससे सुनने वाले को परेशानी नहीं होगी। आप अपने परिवार, मित्र तथा बन्धुजनों में सदैव प्रिय रहेंगी तथा आजीवन यथाशक्ति इनकी सहायता करती रहेंगी। स्वभाव एवं आचरण आपका उत्तम रहेगा

तथा प्रकृति कफ-पित मिश्रित होगी।

मृदुरूपचित्तगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।
परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्तः।।
प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो।
भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्तः।।
जातक दीपिका

आपकी वाणी दूसरे लोगों को हमेशा अच्छी लगेगी। नेत्र आपके चंचलता से युक्त रहेंगे। नृत्य एवं संगीत आपको बहुत प्रिय होंगे तथा इनके विषय में आप अच्छी जानकारी रखेंगी। आप अपने सद्गुणों तथा धनैश्वर्य के कारण कीर्ति युक्त रहेंगी। आप दीर्घाकृति की तथा गौरवर्ण से युक्त रहेंगी। भाषण देने में आप निपुण होगी तथा आप दृढनिश्चयी भी होंगी जिस चीज का संकल्प एक बार कर लेंगी उसे पूरा करके ही छोड़ेंगी। अधिकांश कार्यों को पूर्ण करने में आप समर्थ रहेंगी तथा न्याय का भी अनुपालन करेंगी।

मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रियः।
गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी।।
गौरोदीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः।।
मानसागरी

आप देवगण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी वाणी श्रेष्ठ एवं मधुर होगी। आप हमेशा सत्य बोलेंगी तथा सत्य के मार्ग का अनुपालन करने के लिए प्रयत्नशील रहेगी। बुद्धि भी आपकी सरल होगी। सरलता से अपने विचार प्रकट करना तथा वैसे ही सादगी से दूसरे के विचारों को आत्मसात करना आपकी मुख्य विशेषता होगी। आप सामान्यतया शाकाहारी भोजन करना पसन्द करेंगी। गुणों के विषय में आप पूर्ण ज्ञाता होंगी तथा श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से आप सर्वथा युक्त रहेंगी। समस्त भौतिक सुखों से आप सम्पूर्ण एवं समृद्ध रहेंगी तथा इनका किसी भी प्रकार का अभाव नहीं रहेगा।

आप देखने में दर्शनीय तथा शरीर से स्वस्थ होंगी। दानशीलता आपके स्वभाव का प्रमुख गुण रहेगा जिसका समयानुसार आप अनुशीलन करती रहेंगी। सादगी आपको अत्याधिक पसन्द होगी तथा दिखावटीपन से हमेशा दूर ही रहेंगी तथा समाज में आपका सम्मान एक विदुषी महिला के रूप में किया जाएगा।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा

वैभवशाली होता है।

सर्प योनि में उत्पन्न होने के कारण कभी कभी आपको अत्यन्त क्रोध आएगा। आप समस्त कार्यों को चंचलता पूर्वक सम्पन्न करेंगी जिसके मनोवांछित परिणाम यदा कदा ही प्राप्त होंगे। साथ ही आप जिहवा से भी चंचल होंगी तथा चटपटे स्वाद आपको प्रिय होंगे एवं इनकी इच्छा आपके मन में हमेशा रहेगी।

दीर्घरोषो महाक्रूरः कृतघ्नश्च भवेन्नरः।
चपलो रसना लोलः सर्प योनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् सर्प योनि में उत्पन्न जातक महाक्रोधी, महाक्रूर, कृतघ्न, चंचल तथा जीभ का लोलुप होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करती रहेंगी। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। साथ ही जीवन के सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा निर्देश देती रहेंगी। दान पुण्य संबंधी कार्य में भी आप उन्हीं का अनुसरण करेंगी।

आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी परन्तु आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा यदा कदा किसी न किसी बात पर विवाद होता रहेगा परन्तु ये सामान्य मतभेद स्वतः समाप्त हो जाएंगे एवं सामान्य संबंध बने रहेंगे। समय ही उन्हें हमेशा अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति सप्तम भाव में है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके शुभ प्रभाव से धनलाभ प्राप्त करने में वे सफल होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता एवं सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह कराने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही आप उनकी विश्वास पात्र भी होंगी।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन में भी नित्य रूचिशील रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा कुछ सैद्धान्तिक मतभेद भी होंगे जिससे सम्बन्धों में क्षणिक तनाव एवं कटुता उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समयोपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों की आप प्रिय रहेंगी एवं उनसे सम्मान एवं स्नेह की नित्य आपको प्राप्ति होती रहेगी। उनका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति होती रहेगी। धन सम्पत्ति से

वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको अपनी ओर से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। सुख दुःख में वे पूर्ण रूपेण आपके साथ रहेंगे एवं शत्रु वर्ग से आपकी यत्नपूर्वक सुरक्षा करेंगे।

आपका भी उनके प्रति हार्दिक प्रेम रहेगा एवं उनके कल्याण संबंधी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प मात्रा में कटुता का भी आभास होगा लेकिन कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करके अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

आपके लिए आषाढ़ मास, द्वितीया सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग, तृतीय प्रहर, सोमवार तथा धनुराशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले हैं। अतः आप 15 जून से 14 जुलाई के मध्य 2,7,12 तिथियों, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग में कोई भी शुभकार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय-विक्रय या अन्य कोई महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही सोमवार, तृतीय प्रहर तथा धनुराशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें अन्यथा असफलता का ही सामना करना पड़ेगा। इन दिनों एवं समय में शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्ण रूपेण ध्यान रखा जाना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो यथा मानसिक अशान्ति, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में व्यवधान उत्पन्न हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको नियमित रूप से प्रातः तथा सायं काल गणेश जी के दर्शन करने चाहिए तथा बुधवार के उपवास करने चाहिए। साथ ही हरित वस्त्र, पन्ना, घृत, मिश्री, गुङ इत्यादि पदार्थों को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। सुपात्र को दान देने से अशुभ फलों में न्यूनता होगी तथा आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप किसी विद्वान से सम्पन करवाने चाहिए।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।